माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

सुनील कुमार*
आनंद कुमार**

यह शोध पत्र शोधार्थी द्वारा किए गए माध्यमिक विद्यालयों (सरकारी एवं निजी) में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन एवं सामाजिक समायोजन स्तर के तुलनात्मक शोध अध्ययन पर आधारित है। शोधार्थी द्वारा इस शोध अध्ययन में वर्णनात्मक या सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। इस शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी ने उत्तराखंड के चम्पावत जनपद के लोहाघाट विकासखंड के 5 सरकारी एवं 5 निजी विद्यालयों के 120 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया था। प्रदत्तों का संकलन सिन्हा एवं सिन्हा (2007) द्वारा निर्मित स्कूल समायोजन तालिका मानकीकृत उपकरण द्वारा किया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण द्वारा किया गया था। इस शोध अध्ययन में निष्कर्ष रूप में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के मध्य शैक्षिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्रों का शैक्षिक समायोजन स्तर छात्राओं से बेहतर पाया गया, वहीं माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के मध्य शैक्षिक समायोजन स्तर में सार्थक नहीं पाया गया तथा छात्राओं का शैक्षिक समायोजन स्तर छात्रों से बेहतर पाया गया। जबकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के मध्य सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं की अपेक्षा छात्रों का सामाजिक समायोजन स्तर बेहतर पाया गया। वहीं निजी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के मध्य सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर पाया गया एवं छात्राओं का सामाजिक समायोजन स्तर छात्रों से बेहतर पाया गया है।

विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास के लिए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में विद्यार्थियों की गतिविधि एवं भागीदारी (12.9) शीर्षक के अंतर्गत शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी प्रमुख हितधारक है। इसलिए विद्यार्थियों के विकास के प्रत्येक पहलू पर विशेष रूप से खेल, सांस्कृतिक या कला क्लब, इको क्लब गतिविधि, सामुदायिक सेवा परियोजनाओं आदि पर बल देने के लिए कहा गया है। साथ ही, प्रत्येक शिक्षा संस्थान में तनाव और संवेगात्मक समायोजन से निपटने के लिए परामर्श प्रणालियाँ होंगी (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*)।

मनोवैज्ञानिक रूप से मनुष्य का विकास कई अवस्थाओं में होता है, विकास की तीसरी अवस्था किशोरावस्था है, किशोरावस्था में विद्यार्थियों में शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन होते हैं। किशोरों को इस अवस्था में कई समस्याओं का सामना

* *असिस्टेंट प्रोफेसर*, बी.एड. विभाग, स्वामी विवेकानंद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लोहाघाट (चम्पावत), उत्तराखंड 262524
** *प्रोफेसर*, शिक्षा विद्यापीठ, श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड 248001

करना पड़ता है, उसी समस्या में समायोजन भी एक बड़ी समस्या है। किशोर इस अवस्था में अपने परिवार, विद्यालय, शैक्षिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक आदि जैसे अन्य क्षेत्रों में समायोजन करने में बहुत-सी चुनौतियों का सामना करता है। कोलमैन के अनुसार "समायोजन, किसी व्यक्ति के द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं तनाव की स्थिति से निपटने के लिए किए गए प्रयासों का परिणाम है।" बोरिंग, लैंगफील्ड एवं वील्ड के अनुसार "समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्कताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखता है। मैस्ले एवं मिटिलमैन के अनुसार जीवन में संतुष्टि और आनंद प्राप्ति का मार्ग समायोजन से होकर गुजरता है। समायोजन का एक पक्ष नहीं होता है, समायोजन के कई पक्ष होते है, जैसे— शैक्षिक, सामाजिक, गृह एवं विद्यालय आदि। जिसमें मनुष्य को सभी पक्षों में जीवन की आवश्यकता के अनुसार समायोजन की आवश्यकता पड़ती है। जीवन की आवश्कताओं और माँगों से अपनी शक्ति और सामर्थ्य के संदर्भ में अनुकूलन करके चलना ही समायोजन कहलाता है। (निर्देशन एवं परामर्श (2018) उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, उत्तराखंड)। मनुष्य के द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए वातावरण की विभिन्न परिस्थितियों के साथ सामंजस्य एवं संतुलन बनाने की प्रक्रिया को समायोजन कहते हैं। समायोजन के कई क्षेत्र होते हैं, जैसे— शैक्षिक समायोजन, सामाजिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन, गृह समायोजन और पारिवारिक समायोजन आदि इन सभी क्षेत्रों में मनुष्य को समायोजन की आवश्यकता होती है। इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा केवल शैक्षिक समायोजन एवं सामाजिक समायोजन का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

घोष और राज (2021) के शोध अध्ययन "माध्यमिक विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन का आविर्भाव— एक चुनौती" से ज्ञात हुआ कि सामाजिक समायोजन के अभाव से समाज में कितनी ईर्ष्या, भय, क्रोध एवं घृणा आदि व्याप्त है, माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामाजिक समायोजन की कमी से विद्यार्थी, परिवार, विद्यालय तथा समाज आदि पर आक्रोशित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं एवं धैर्य की कमी उनके अंदर दिखाई देती है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी सर्वांगीण विकास के मध्य चरण में होते हैं। अतः सामाजिक समायोजन का अभाव उनकी संपूर्ण विकास प्रक्रिया को प्रभावित करता है। बलवान (2019) के शोध अध्ययन "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण, शैक्षिक निष्पत्ति एवं समायोजन का अध्ययन" से ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। निष्कर्षतः संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक समायोजन में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में एकरूपता पाई गई।

सिंह एवं नौटियाल (2018) के शोध अध्ययन "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का उनके जेंडर, क्षेत्र एवं विषय वर्ग के संदर्भ में अध्ययन" से ज्ञात हुआ कि छात्रों तथा छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर

पाया गया है। आलम (2018) के शोध अध्ययन "स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट अमंग सीनियर सेकंडरी स्कूल स्टुडेंट्स" से ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्रों एवं छात्राओं के मध्य भी समायोजन स्तर में सार्थक अंतर पाया गया।

यादव (2018) के शोध अध्ययन "उच्च माध्यमिक स्तर के एकल एवं सह-शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर का अध्ययन" से ज्ञात हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर के सह-शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। चम्याल एवं मनराल (2017) के शोध अध्ययन "अ कम्पेरेटिव स्टडी अमंग स्टूडेंट्स ऑफ सेकंडरी एंड सीनियर स्कूल ऑफ अल्मोड़ा डिस्ट्रीक्ट" से ज्ञात हुआ कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के बीच समायोजन में सार्थक अंतर पाया। भगत (2016) के शोध अध्ययन "कंपेरेटिव स्टडी ऑफ एडजेस्टमेंट अमंग सेकेंडरी स्कूल बॉयज एंड गर्ल्स" से ज्ञात हुआ कि छात्र-छात्राओं में समायोजन स्तर में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राएँ, छात्रों से अधिक समायोजित पाई गईं। पटेल (2016) के शोध अध्ययन "माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का समायोजन" से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन जेंडर एवं पारिवारिक स्तर पर उच्च सार्थक अंतर पाया गया। निधि एवं अन्य (2015) ने कॉलेज विद्यार्थियों के समायोजन से संबंधित समस्याओं का उनके जेंडर, आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी एवं कम शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की समायोजन संबंधी समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं सार्थकता

आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम परिवर्तित हो गया है, मनुष्य अपनी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के अनुसार शिक्षण संस्थानों का चयन कर रहा है। यदि वह आर्थिक रूप से वंचित है तो वह अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए आज सरकारी विद्यालयों का चयन करता है, वहीं यदि वह आर्थिक रूप से बेहतर है तो वह अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए निजी विद्यालयों का चयन करता है। वर्तमान में विद्यालयों में शिक्षण-अधिगम का प्रारूप भी परिवर्तित हो गया है। भारत सरकार द्वारा *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* को पूरे देश में लागू कर दिया गया है, जिसने शिक्षा के प्रारूप को आँगनवाड़ी स्तर से उच्च स्तर शिक्षा को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। इसका प्रभाव आने वाले कुछ वर्षों बाद दिखाई देगा, चाहे वह निजी विद्यालय या सरकारी विद्यालय हो। वर्तमान में देश में निजी विद्यालयों एवं सरकारी विद्यालयों के मध्य एक खाई बन गई है। लगातार सरकारी शैक्षिक संस्थानों में विद्यार्थियों की संख्या कम हो रही है, वहीं निजी संस्थानों में यह संख्या निरंतर बढ़ रही है। सरकारी विद्यालयों में शिक्षा का स्तर निरंतर गिर रहा है, जिसके कारण विद्यार्थियों के विकास पर भी प्रभाव पड़ रहा होगा। चम्याल एवं मनराल (2017) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि निजी विद्यालय के विद्यार्थी सरकारी विद्यालयों

के विद्यार्थियों से अधिक समायोजित पाए गए थे, इसलिए जिज्ञासावश शोधार्थी द्वारा इस समस्या का चयन किया गया है कि सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षिक समायोजन एवं सामाजिक समायोजन का स्तर क्या है।

शोध समस्या

माध्यमिक विद्यालयों (सरकारी एवं निजी) में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन (उत्तराखंड राज्य के चम्पावत जनपद के संदर्भ में)।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

- **शैक्षिक समायोजन**— शैक्षिक समायोजन का तात्पर्य है, शैक्षिक परिवेश के साथ अपना सामंजस्य स्थापित करना। व्यक्ति जितना अपने परिवार रिश्तेदारों एवं मित्रों से समायोजन करता है, उसी प्रकार वह विद्यार्थी रूप में विद्यालय के वातावरण के अनुकूल अपने आपको समायोजित करता है। हम कह सकते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं एवं चुनौतियों के निराकरण के लिए शैक्षिक समायोजन अति आवश्यक है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों एवं जटिल समस्याओं के निराकरण को ही शैक्षिक समायोजन कहा जाता है।
- **सामाजिक समायोजन**— सामाजिक समायोजन से आशय है, समाज के अनुसार स्वयं को समायोजित करना। सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर व्यक्ति को जितनी अपने आप से संतुष्ट तथा समायोजित होने की आवश्यकता होती है, उतना ही अपने सामाजिक परिवेश तथा उसमें उपलब्ध परिस्थितियों से भी संतुष्टि का अनुभव करना चाहिए, सामाजिक परिवेश का दायरा उसके घर-परिवार से शुरू होकर विश्व की सीमाओं को छूता है, व्यक्ति को घर-परिवार एवं सगे-संबंधियों से सामाजिक दायरे में रहकर समायोजन करना चाहिए, इसी को सामाजिक समायोजन कहा जाता है।

शोध उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

- सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं—

- सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर

अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

- निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन के लिए वर्णनात्मक या सर्वे विधि का प्रयोग किया गया था, क्योंकि अनुसंधान समस्या सर्वेक्षण व वर्णनात्मक स्तर की है, इसलिए यह अनुसंधान विधि उपयुक्त थी।

जनसंख्या

इस शोध अध्ययन के लिए जनसंख्या के रूप में उत्तराखंड राज्य के चम्पावत जनपद के लोहाघाट एवं चम्पावत विकासखंड के समस्त सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थी थे।

प्रतिदर्श

इस शोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में जनसंख्या (1200) के लगभग 10 प्रतिशत को प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया। इस हेतु चम्पावत जनपद के लोहाघाट विकासखंड के 10 विद्यालयों (5 सरकारी एवं 5 निजी विद्यालयों) से 120 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा किया गया। यह शोध अध्ययन दिसंबर, 2022 एवं जनवरी 2023 में किया गया था।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा मनोवैज्ञानिक परीक्षण के अंतर्गत मानकीकृत सिन्हा एवं सिन्हा (2007) द्वारा निर्मित स्कूल समायोजन तालिका का प्रयोग किया गया था।

प्रदत्तों का संकलन

शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से मानकीकृत शोध उपकरण— "स्कूली विद्यार्थियों के लिए समायोजन तालिका" को प्रशासित कर प्रदत्तों का संकलन किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत (माध्य एवं मानक विचलन) एवं अनुमानात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत टी-परीक्षण के माध्यम से किया गया।

परिकल्पना 1— सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1— सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं का शैक्षिक समायोजन स्तर का विश्लेषण

चर	संख्या (N)		माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	टी-मान (t-test)	सार्थकता स्तर
शैक्षिक समायोजन	60	छात्र 30	7.17	3.59	2.55	$p < 0.05$ सार्थक/अस्वीकृत
		छात्रा 30	4.97	3.06		

तालिका 1 में दर्शाया गया है कि सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। सरकारी विद्यालयों के दोनों समूहों छात्र तथा छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 7.17 एवं 4.97 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.59 एवं 3.06 प्राप्त हुआ है तथा गणना द्वारा टी-मान 2.55 प्राप्त हुआ है। तालिका 1 में स्वतत्रंता के अंश 58 एवं 0.05 स्तर पर क्रान्तिक मान 2.00 से टी-मान 2.55 अधिक है, जो कि सार्थकता के स्तर $p < 0.05$ पर सार्थक पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना "सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है", को अस्वीकृत किया जाता है अर्थात सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है तथा प्राप्त मध्यमान के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों का शैक्षिक समायोजन स्तर छात्राओं से बेहतर पाया गया है। भगत (2016) के शोध अध्ययन में सार्थक अंतर पाया गया था। ऐसा संभवतः शैक्षिक वातावरण और परिस्थितियों के कारण हो सकता है।

परिकल्पना 2— निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2 में दर्शाया गया है कि निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक समायोजन स्तर में सार्थकता अंतर नहीं है। दोनों समूहों के मध्यमान क्रमशः 5.07 एवं 4.40 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.95 एवं 2.85 है, गणना द्वारा प्राप्त टी-मान 0.75 है, जो तालिका में स्वतत्रंता के अंश 58 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर दिए गए क्रान्तिक मान 2.00 से कम है, जो सार्थकता के स्तर $p>0.05$ सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना "निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है", को स्वीकृत किया जा सकता है अर्थात निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा प्राप्त मध्यमान के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं का शैक्षिक समायोजन स्तर छात्रों से बेहतर पाया गया है। जिसका कारण छात्राओं का अध्ययन के प्रति संवेदनशील होना हो सकता है। संभवतः विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण का बेहतर होना और शिक्षकों का सही मार्गदर्शन मिलना एक कारण हो सकता है।

तालिका 2— निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं का शैक्षिक समायोजन स्तर का विश्लेषण

चर	संख्या (N)		माध्य (M)	मानक विचलन	टी-मान (t-test)	सार्थकता स्तर
शैक्षिक समायोजन	60	छात्र 30	5.07	3.95	0.75	$p>0.05$ सार्थक नहीं/स्वीकृत
		छात्रा 30	4.40	2.85		

तालिका 3— सरकारी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं का सामाजिक समायोजन स्तर का विश्लेषण

चर	संख्या (N)		माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	टी-मान (t-test)	सार्थकता स्तर
सामाजिक समायोजन	60	छात्र 30	7.87	3.09	2.23	$p < 0.05$ सार्थक/अस्वीकृत
		छात्रा 30	6.2	2.28		

परिकल्पना 3— सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 3 में दर्शाया गया है कि सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर के मध्य सार्थक अंतर है। दोनों समूहों छात्र एवं छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 7.87 एवं 6.2 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.09 एवं 2.28 है तथा गणना द्वारा प्राप्त टी-मान 2.23 है, तालिका 3 में स्वतत्रंता के अंश 58 एवं 0.05 स्तर पर क्रान्तिक मान 2.00 से टी-मान 2.23 अधिक है, जो सार्थकता के स्तर $p < 0.05$ पर सार्थक है। अतः परिकल्पना "सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है", को अस्वीकृत किया जाता है अर्थात सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है तथा मध्यमानों की तुलना करने पर छात्राओं की अपेक्षा छात्रों का सामाजिक समायोजन स्तर बेहतर है। इस शोध अध्ययन के विपरीत जोसफ और मैथ्यू (2019) के शोध अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर पाया गया था जो शोधार्थी के द्वारा किए गए शोध परिणाम का समर्थन करते है एवं छात्राओं का सामाजिक समायोजन स्तर छात्रों से बेहतर था। सरकारी विद्यालयों में सामाजिक गतिविधियों का संचालन निरंतर रूप में आयोजित होता रहता है, जिससे विद्यार्थियों को समय-समय पर समाज से संबंधित गतिविधियों में प्रतिभाग करना भी संभावित कारण हो सकता है।

परिकल्पना 4— निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 4— निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं का सामाजिक समायोजन स्तर का विश्लेषण

चर	संख्या (N)		माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	टी-मान (t-test)	सार्थकता स्तर
सामाजिक समायोजन	60	छात्र 30	6.2	2.04	2.58	$p<0.05$ सार्थक/अस्वीकृत
		छात्रा 30	7.83	2.80		

तालिका 4 में दर्शाया गया है, निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर के मध्य सार्थक अंतर है। दोनों समूहों छात्र एवं छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 6.2 एवं 7.83 तथा मानक विचलन 2.04 एवं 2.80 है तथा गणना द्वारा प्राप्त टी-मान 2.58 है, तालिका 4 में स्वतत्रंता के अंश 58 एवं 0.05 स्तर पर क्रान्तिक मान 2.00 से टी-मान 2.58 अधिक है, जो सार्थकता स्तर $p < 0.05$ पर सार्थक है। अतः परिकल्पना "निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है", को अस्वीकृत किया जा सकता है अर्थात निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है तथा प्राप्त मध्यमान के आधार पर यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं का सामाजिक समायोजन स्तर छात्रों से बेहतर पाया गया है। देविका (2013) एवं सिंह और नौटियाल (2018) के शोध अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया था। वहीं इसी शोध अध्ययन के समान भगत (2016), मकवाना और काजी (2014) एवं चौहान (2013) ने अपने शोध अध्ययन में सार्थक अंतर पाया, जिसका कारण सामाजिक विभिन्नता था, जो इस परिणाम का समर्थन करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक विविधता एक कारण हो सकता है जिसके कारण छात्र एवं छात्राओं के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है।

शोध निष्कर्ष

- सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन स्तर में अंतर सार्थक है तथा मध्यमान के आधार पर यह भी निष्कर्ष प्राप्त किया है कि छात्रों का शैक्षिक समायोजन स्तर छात्राओं से बेहतर है।
- निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र तथा छात्राओं के शैक्षिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है तथा मध्यमान के आधार पर यह भी निष्कर्ष प्राप्त किया है कि छात्रों का सामाजिक समायोजन स्तर छात्राओं से बेहतर है।
- निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है तथा प्राप्त मध्यमान के आधार पर यह भी निष्कर्ष प्राप्त किया है कि निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं का सामाजिक समायोजन स्तर छात्रों से बेहतर है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन से ज्ञात निष्कर्षों एवं परिणामों के आधार पर यह शोध अध्ययन शैक्षिक एवं सामाजिक रूप से सार्थक तथा प्रासांगिक होगा। यह शोध अध्ययन निश्चित रूप से शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शैक्षिक प्रशासकों एवं शोधार्थियों के लिए निम्नवत रूप में सहायक होगा।

यह शोध अध्ययन विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं विद्यालय में समायोजित होने में सहायता करेगा विद्यालय में शिक्षकों को शैक्षिक वातावरण सृजित करने में सहायक होगा। विद्यालय में शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण स्थापित करने में सहायता करेगा। साथ ही साथ यह विद्यालयों में अध्ययनरत अन्य कक्षाओं के विद्यार्थियों को भी विभिन्न क्षेत्रों में समायोजित होने में सहायता करेगा, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके तथा जिससे विद्यार्थी विद्यालय एवं समाज के वातावरण आनंद ले सकें एवं अपने आपको परिस्थितियों के अनुसार समायोजित कर सकें।

यह शोध अध्ययन विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को विद्यालय में शैक्षिक वातावरण व शिक्षक एवं प्रधानाध्यापकों के मध्य, शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मध्य सौहार्द संबंध स्थापित करने में सहायक होगा, शैक्षिक प्रशासकों को शिक्षा प्रणाली में सुधार करने में सहायता करेगा और शिक्षकों का उचित मार्गदर्शन करने में सहायक होगा तथा शिक्षा प्रणाली के लिए उचित नीति बनाने में सहायक होगा। शोधार्थियों को उनके शोधकार्य को पूर्ण करने में मार्ग प्रशस्त करेगा।

संदर्भ

आलम, एम.एम. 2018. स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट अमंग सीनियर सेकंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स*. वॉल्यूम 6, इश्यू 1. 28 मई 2013 को https://ijcrt.org/papers/IJCRT1801006.pdf से प्राप्त किया गया.

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय. 2018. पुस्तक-निर्देशन एवं परामर्श. उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, उत्तराखंड. 23 जून 2023 को uou.ac.in/sites/default/files/2023-04/ B-10-A-Guidance-and-counselling.pdf से प्राप्त किया गया.

घोष, सुप्रिया और राज, ऋषि. 2021. माध्यमिक छात्रों में सामाजिक समायोजन का आविर्भाव — एक चुनौती. *एजीपीई द रॉयल गोंडवाना रिसर्च जर्नल ऑफ हिस्ट्री, साइंस, इकोनॉमिक, पॉलिटिकल एंड सोशल साइंस*. भाग 2, अंक 2, अक्तूबर–दिसंबर 2021.

चम्याल डी. और बी. मनराल. 2017. कम्पेरटीव स्टडी अमंग स्टूडेंट ऑफ सेकंडरी एंड सीनियर सेकंडरी स्कूल ऑफ अल्मोड़ा डिस्ट्रीक्ट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी*. वाल्यूम 4, अंक 2, संख्या 85, डी.आई.पी.:18.01.009/20170402.

चौहान, वी. 2013. दुर्ग जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन पर एक अध्ययन, *जर्नल ऑफ रिसर्च एंड मेथड्स इन एजुकेशन*. वाल्यूम 1, अंक 1, जनवरी–फरवरी 2013, पृष्ठ संख्या 50–52.

जोसेफ, बी. और एम. मैथ्यू. 2019. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक समायोजन पर एक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट रिसर्च*.

देविका, आर. 2013. कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ द एडजस्टमेंट ऑफ सेकंडरी स्टूडेंट्स. *आई-मैनेजर जर्नल*, वाल्यूम 7, अंक 3, नवंबर 2013 – जनवरी 2014. 28 मई 2008 को https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1098608.pdf से प्राप्त किया गया.

निधि और अन्य. 2015. एडजस्टमेंट प्रॉब्लम्स ऑफ कॉलेज स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू जेंडर सोशियो-इकॉनामिक स्टेटस एंड एकेडमीक अचीवमेंट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करेंट रिसर्च*. वाल्यूम 7, अंक 4, पृष्ठ संख्या 14574–14578.

पटेल. ए. 2016. एडजस्टमेंट ऑफ सेकंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इम्पैक्ट*. वाल्यूम 1, अंक 2. अप्रैल–जून 2016 डी.आई.पी: 18.02.003/20160102 आई.एस.एस.एन. :2455-670X. 4 जून (2023 को https://ijsi.in/wp-content/uploads/2020/11/18.02.003-20160102.pdf से प्राप्त किया गया.

भगत, पी. 2016. कम्परेटीव स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट अमंग सेकंडरी स्कूल बॉयस एंड गर्ल्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च*. वाल्यूम 2, अंक 7, प्रिंट: आई.एस.एस.एन.: 2394-7500, ऑनलाइन:आई.एस.एस.एन.: 23945869.

मकवान, एम.डी. और एस.एम.काजी. 2014. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का उनके जेंडर के संबंध में समायोजन, *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी*. अंक 1, पेपर आई.डी. B00241V2I12014, अक्तूबर–दिसंबर 2014.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. मानव संसाधन विकास मत्रांलय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

मोहम्मद, आर. और रितु. 2012. वरिष्ठ माध्यमिक स्कूलों के विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण योग्यता का अध्ययन. *एम.ए.ए. ओमवती जर्नल ऑफ एडिटिक रिसर्च एडं डेवलपमेंट*. भाग 3, अंक 1, पृष्ठ संख्या 25–27.

यादव, ए.के. 2018. उच्च माध्यमिक स्तर के एकल एवं सह शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर का अध्ययन. *रिमार्किंग एन एनेलाईजेशन*. वाल्यूम 2, अंक 11, फरवरी 2018, पृष्ठ संख्या 82–85.

रमेश. 2015. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण योग्यता और समायोजन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च*. ऑनलाइन आई.एस.एस.एन. 2319-7069.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2020. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क* 2020. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

———. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क* 2022. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

———. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क* 2023. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

सिन्हा, ए.के.पी. और आर. पी. सिंह. 1971. मैनुअल फॉर एडजस्टमेंट इंवेंटरी फॉर स्कूल स्टूडेंट्स. नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन. आगरा, भारत.

सिंह, पी. और ए.के. नौटियाल. 2018. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का उनके लिंग, क्षेत्र एवं विषय वर्ग के संदर्भ में अध्ययन, *श्रृंखला— एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका*., प्रिंट: आई.एस.एस.एन.: 2321-290X, ऑनलाइन:आई.एस.एस.एन.: 2349-980X, वाल्यूम 6, अंक 4, दिसंबर, भाग 2, 2018.

सिंह, बलवान. 2019. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण, शैक्षिक निष्पत्ति एवं समायोजन का अध्ययन. *श्रृंखला— एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका*. आर.एन.आई.: UPBIL/2013/55327. वाल्यूम 6, अंक 6, फरवरी, भाग 2, 2019. ऑनलाइन: आई.एस.एस.एन. : 2349-980X.